भीष्म साहनी

कागावा मारी
香川真理

भीष्म साहनी अंग्रेजी के प्राद्यापक थे, पर उन्होंने हिंदी में साहित्य सृजन किया था। भारत की आजादी के बाद वे लेखन के प्रति प्रतिबद्ध हो गए।

जापान में भी उनकी पुस्तकें ----तमस् ,मेरे भाई बलराज, मुर्ग मुसल्लम आदि प्रसिद्ध हैं।

भीष्म साहनी उन लोगों के बारे में लिखते थे, जिन्होंने भारत-पाकिस्तान विभाजन के कारण अपने परिवार और दोस्तों को खो दिया था।

वे अपने भाई बलराज से अलग विचार रखते थे। लेकिन वे बलराज का आदर करते थ,और उन्होंने उनके बारे में पुस्तक भी लिखी है।

तमस् में भारत –पाकिस्तान विभाजन के ठीक पहले की उथल पुथल के बारे में लिखा गया है। मैंने उनकी छोटी कहानी मुर्ग मुसल्लम पढ़ी है।

इस कहानी में कुछ राजनैतिक कैदी जेल में जीवन व्यतीत करते थे। कारापाल ने पहले उन्हें अच्छा खाना नहीं दिया था। लेकिन उसे पता चला कि उनमें से एक कैदी राजनेता के परिवार से था। कारापाल यह मालूम होते ही उसे अच्छा खाना देने लगा। और उससे अच्छे व्यवहार करने लगा। जेल में एक रसोइया भी कैदी था। पर वह निरपराध था।

यह अजीव बात है कि अगर राजनीतिक कैदी बंदी बना लिया जाता है, तो वह मेटा हो जाता है।

भीष्म साहनी की रचनाएँ पढ़कर भारत को जाना जा सकता है। वे लोगों के जीवन और व्यवहार का कुशलता से चित्रण करते थे। पढ़ने में यह मूल्यवान

है।

किसी दिन मैं उनकी किताबें और पढ़ना चाहती हूँ।